B-3

# श्री श्मशान काली
# सहस्रनाम-स्तोत्र

सम्पादक

'कुल-भूषण' पं० रमादत्त शुक्ल, एम० ए०

प्रकाशक

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

अलोपीबाग मार्ग, प्रयाग—६

# श्री श्मशान काली
# सहस्रनाम-स्तोत्र

[ संशोधित एवं परिवर्धित ]

---

सम्पादक

'कुल-भूषण' पं० रमादत्त शुक्ल, एम० ए०

---

प्रकाशक

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

अलोपीबाग मार्ग, प्रयाग—६

प्रकाशक

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

अलोपीबाग मार्ग, प्रयाग—६

द्वितीय संस्करण, दिसम्बर १९८४

# अ नु क्र म णि का



मुद्रक

परावाणी प्रेस

अलोपीबाग मार्ग, प्रयाग—६

मूल्य २-०० रु०

# प्राक्कथन

'कौल-कल्पतरु' पण्डित देवीदत्त शुक्ल द्वारा संग्रहीत भगवती काली के स्तोत्रों का संग्रह सं० २०१३ में 'श्रीकाली-स्तव-मञ्जरी' नाम से प्रकाशित किया गया था। उसका उपासकों द्वारा हृदय से स्वागत किया गया। प्रथम संस्करण के समाप्त हो जाने के वाद उसका संशोधित एवं परिवर्द्धित रूप में पुनः प्रकाशन करते समय सागर (म० प्र०) के श्री भैरवा-नन्द नाथ का एक महत्वपूर्ण लेख उसमें प्रकाशित 'श्रीकालिका-सहस्रनाम स्तोत्र' के विषय में प्राप्त हुआ। यह लेख शोधात्मक एवं ज्ञान-वर्द्धक था। अतः निश्चय किया गया कि उक्त सहस्र-नाम स्तोत्र को अलग पुस्तक-रूप में प्रकाशित किया जाय, जिसमें उक्त लेख भी उद्धृत रहे।

'एक तुलनात्मक अध्ययन' शीर्षक से उक्त लेख प्रारम्भ करते हुये श्री भैरवानन्द नाथ लिखते हैं—

'सभी देवताओं की उपासना में सहस्रनाम-स्तोत्र का अपना विशिष्ट महत्व होता है। देवता के नामों को मन्त्र ही माना जाता है और अष्टोत्तर-शत या सहस्र-नामों को मिलाने से नामों की माला वन जाती है, इसलिये इन्हें 'अष्टोत्तर-शत-नाम माला-मन्त्र' अथवा 'सहस्र-नाम माला-मन्त्र' भी कहते हैं। यह एक विडम्वना ही है कि किसी भी धार्मिक साहित्य की दो प्रतियों में एक-रूपता नहीं मिलती। इससे प्रायः बड़ी उलझन पैदा हो जाती है। मान लीजिये, कोई साधक किसी स्तोत्र का पाठ पूर्णश्रद्धा और भक्ति के साथ करता है, किन्तु कुछ समय के

वाद उसे उसी स्तोत्र की एक दूसरी प्रति प्राप्त होती है, जिसमें ढेरों पाठ-भेद हैं, श्लोक-के-श्लोक कम या अधिक हैं, तो वह साधक एक अजीव ऊहापोह में फँस जाता है कि किस प्रति को सही माने और किसे गलत।'

स्तोत्रादि के पाठ-भेदादि के कारण ऊहा-पोह में फँसने की जो वात यहाँ कही गई है, उसके सम्वन्ध में यह स्पष्ट कर देना उचित होगा कि निष्ठावान् साधक ऐसी परिस्थिति में विचलित नहीं होते। होना भी नहीं चाहिये, क्योंकि श्रद्धा-भक्ति से किया गया पाठ फल-प्रद होता ही है, भले ही उसमें किसी प्रकार की त्रुटि अज्ञान-वश हो रही हो। इसीलिये हर पूजा-पाठ के अन्त में **'क्षमा-प्रार्थना'** की विधि है। हाँ, जान-बूझ कर त्रुटि-पूर्ण पाठ करना अवश्य हानि-कारक होता है। अतः त्रुटियों का ज्ञान होते ही उन्हें दूर कर लेना चाहिये।

त्रुटियाँ दूर करने का दायित्व वास्तव में शोध-कर्ताओं का है। यह प्रसन्नता की वात है कि शाक्त-साधना-साहित्य के प्रति अव कुछ विद्वान् साधकों का ध्यान जा रहा है, जिससे आशा होती है कि यथा-सम्भव शुद्ध साहित्य लोगों को उपलब्ध हो सकेगा। श्रीभैरवानन्दनाथ जी के मन्तव्य की यही उपयोगिता है। आप आगे लिखते हैं—

'उक्त प्रकार की अनेक-रूपता के कुछ उदाहरण देना उचित होगा। यथा—**'श्रीदक्षिणा-कालिका हृदय-स्तोत्र'** का प्रकाशन 'श्रीकाली-नित्यार्चन' और 'श्रीकाली-स्तव-मञ्जरी' में हुआ है और दोनों में काफी अन्तर है। इन दोनों से अलग एक तीसरी प्रति मुझे गुरु-क्रम से प्राप्त है। **'श्रीवैरी-मारण काली-कवच'** की कम-से-कम पाँच प्रतियाँ मैंने देखी हैं; अलग-

अलग प्रतियों में इसके छन्द कहीं गायत्री, तो कहीं उष्णिक्; ऋषि कहीं भैरव, कहीं ब्रह्मा, तो कहीं शिव; इसी तरह देवता कहीं श्मशान-काली, तो कहीं भद्रकाली हैं। श्रीदक्षिणा काली के छोटे-वड़े सभी साधकों में 'श्रीजगन्मङ्गल-कवच' का अत्यधिक सम्मान है और पूर्ण श्रद्धा के साथ इसके पुरश्चरण किये जाते हैं परन्तु दुःख है कि इसका सर्व-सम्मत पूर्ण-शुद्ध पाठ अब तक प्रकाशित नहीं हुआ है।'

'सर्व-सम्मत शुद्ध पाठ' का प्रश्न वास्तव में जटिल है। विविध स्तोत्रों का पाठ विभिन्न साधक-मण्डलियों में परम्परागत रूप से होता चला आ रहा है। अपनी-अपनी परम्परा का आग्रह सभी को रहता है। ऐसी दशा में इस परिस्थिति से उबरने का एकमात्र उपाय यही है कि अभीष्ट स्तोत्रादि साहित्य की प्राप्य हस्त-लिखित और मुद्रित प्रतियों को एकत्र कर उनके पाठान्तरों का तुलनात्मक अध्ययन करते हुये सुसङ्गत पाठ का निर्णय किया जाय और उसी के अनुसार विशुद्ध संस्करण का प्रकाशन किया जाय। यह सामान्य कार्य नहीं है। इसे सम्पन्न करने के लिये साधकों, शोध-कर्ताओं और प्रकाशकों में समन्वय की भावना होने की आवश्यकता है।

विचाराधीन 'सहस्रनाम-स्तोत्र' के विषय में श्रीभैरवानन्दनाथ लिखते हैं—

'प्रस्तुत श्रीकालिका सहस्रनाम श्रीकालिका-कुल-सर्वस्व से उद्धृत है। यह सहस्रनाम वास्तव में 'श्रीश्मशान-काली' का है। पूर्व-प्रकाशित विनियोग इस प्रकार है—

अस्य श्रीदक्षिणा-कालिका-सहस्रनाम-स्तोत्रस्य महाकालभैरव ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः श्मशानकाली देवता धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः।

अव जरा सोचिये कि 'श्रीदक्षिणा-काली' के स्तोत्र की देवता 'श्रीश्मशान-काली' किस प्रकार हो सकती हैं ? फिर जिस नाम से स्तोत्र प्रारम्भ होता है, वह नाम 'श्मशान-कालिका' है। अतः स्तोत्र 'श्रीश्मशान-काली' का है। यही सही और उचित भी है।'

श्री भैरवानन्दनाथ जी के उक्त कथन से सहमत होकर ही इस 'श्रीश्मशान-कालिका सहस्रनाम' का प्रकाशन पुस्तक-रूप में किया जा रहा है। आपने एक प्राचीन हस्त-लिखित पुस्तक के आधार पर वड़ा परिश्रम कर इसके अनेक पाठ-भेदों और अधिक श्लोकों को लिखकर भेजने की भी कृपा की है किन्तु आपने उनके औचित्य के सम्बन्ध में अपना कोई मत व्यक्त नहीं किया है।

जहाँ तक पाठ-भेदों का सम्बन्ध है, उन्हें तीन श्रेणियों में बाँटा जा सकता है—(१) वे पाठ-भेद, जो स्पष्टतः अशुद्ध हैं और ग्राह्य नहीं हैं, (२) वे पाठ-भेद जो समानार्थक हैं और पाठ-कर्ता उनमें से किसी भी पाठ को अपनी रुचि के अनुसार ग्रहण कर सकता है और (३) वे पाठ-भेद, जो सर्वथा नवीन और भिन्नार्थक हैं।

पहले प्रकार के पाठ-भेदों के उदाहरण-स्वरूप प्रथम श्लोक के निम्न पाठान्तरों को देखें—

| मूल पाठ | पाठान्तर |
|---|---|
| १ महा-मन्त्रः सर्व० | महा-मन्त्र सर्व० |

इस सम्वन्ध में व्याकरण का नियम 'विसर्जनीयस्य सः' लागू होता है, जिसके अनुसार विसर्ग के वाद यदि 'श ष स' आते हैं, तो विसर्ग का विकल्प से 'स्' हो जाता है। अतः या

तो 'महा-मन्त्रः सर्वं०' पाठ होगा या 'महामन्त्रस् सर्वं'; विसर्ग का लोप नहीं होगा अर्थात् उक्त 'पाठान्तर' सहज ही त्याज्य है।

२ यामासाद्य यामासाध्य

यहाँ मूल पाठ स्पष्ट ही शुद्ध है, जिसका अर्थ है 'जिसे पाकर'। पाठान्तर के 'आसाध्य' का कोई अर्थ नहीं है। लिपि-कार ने 'आसाद्य' शब्द को लिखने में त्रुटि की है।

दूसरे प्रकार के पाठ-भेद का एक उदाहरण प्रथम श्लोक का ही निम्न प्रकार है—

प्राप्तमैश्वर्य-पदमुत्तमं प्राप्तमैश्वर्यमिदमुत्तमं

यहाँ 'पदं' के स्थान पर 'इदं' शब्द के रखने से अर्थ में कोई विशेष अन्तर नहीं आता। अतः इनमें से किसी भी पाठ को ग्रहण किया जा सकता है।

तीसरे प्रकार के पाठ-भेद का उदाहरण ८वें श्लोक में मिलता है—

हृदयामासवोत्सव-मानसां हृदयासाधकासक्त०

यहाँ 'आसवोत्सव' की तुलना में 'साधकासक्त' का अर्थ भिन्न है किन्तु पाठान्तर तभी ग्राह्य है, जब 'हृदया' के स्थान पर 'हृदयां' हो क्योंकि 'हृदयासाधक' समास से कोई सार्थक तात्पर्य नहीं निकलता। इस प्रकार यह पाठान्तर अपने आप में अशुद्ध होने से ग्राह्य नहीं प्रतीत होता।

'पाठ-भेदों' का यह विवेचन इस उद्देश्य से यहाँ प्रस्तुत किया गया है कि शोध-कर्ता महानुभाव इसी प्रकार विचार कर यदि ग्राह्य 'पाठ-भेदों' की ही तालिका बनायें, तो वह उपयोगी हो सकती है। इससे अन्य विचारकों को व्यर्थ परिश्रम भी नहीं करना पड़ेगा।

'अधिक श्लोकों' को दो श्रेणी में विभाजित किया जा सकता है—(१) मूल सहस्र-नाम स्तोत्र से सम्वन्धित और (२) 'फल-श्रुति' से सम्वन्धित।

पहली श्रेणी के अधिक श्लोकों पर विचार करते समय यह ध्यान देने की वात है कि उन्हें ग्रहण करने से नामों की निश्चित संख्या पर क्या प्रभाव पड़ता है। पूर्व-प्रकाशित मूल स्तोत्र में आये नामों की गणना से ज्ञात होता है कि लगभग १०४८ नाम उसमें उल्लिखित हैं अर्थात् सहस्र-संख्या से ४८ अधिक। अधिक श्लोकों के ग्रहण करने से २४ नामों की और वृद्धि हो जाती है। 'अधिकस्य अधिकं फलं' के अनुसार यह वृद्धि भक्तों को स्वीकार्य हो सकती है किन्तु स्तोत्र के नामानुसार संख्या की सीमा निश्चित रहना ही अधिक तर्क-सङ्गत है।

दूसरी श्रेणी अर्थात् 'फल-श्रुति' के श्लोकों में वस्तुतः पाठोपयोगी वही श्लोक होते हैं, जिनमें प्रस्तुत 'सहस्रनाम-स्तोत्र' की महिमा का वर्णन है। शेष श्लोक, जिनमें विविध प्रयोगों का वर्णन हो, ग्राह्य नहीं होते। सामान्यतः व्यवहार में उनका पाठ नहीं किया जाता।

श्री भैरवानन्दनाथ द्वारा संग्रहीत 'पाठ-भेदों' और 'अधिक श्लोकों' पर उक्त समीक्षा के आधार पर विचार करते हुये प्रस्तुत संस्करण का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसके लिये हम उनके आभारी हैं। आशा है कि इस संशोधित पाठ से उपासक वन्धु लाभान्वित होंगे।

मार्गशीर्ष शुक्लाष्टमी, २०४१ —'कुल-भूषण'

श्री श्मशान-कालिका

# सहस्रनाम-स्तोत्रम्

## पूर्व-पीठिका

श्री शिव उवाच—

**कथितोऽयं महा-मन्त्रः सर्व-मन्त्रोत्तमोत्तमः ।**

**यामासाद्य मया प्राप्तमैश्वर्य-पदमुत्तमम् ।। १**

श्री शिव ने कहा—सब मन्त्रों में श्रेष्ठ यह महा-मन्त्र कहा गया है, जिसे पाकर मैंने उत्तम ऐश्वर्य-पूर्ण पद प्राप्त किया है।

**संयुक्तः परया भक्त्या यथोक्त-विधिना भवान् ।**

**कुरुतामर्चनं देव्यास्त्रैलोक्य-विजिगीषया ।। २**

आप परम भक्ति-पूर्वक यथोक्त विधि से त्रैलोक्य पर विजय पाने की इच्छा से देवी की पूजा करें।

श्री परशुराम उवाच—

**प्रसन्नो यदि मे देव ! परमेश ! पुरातन !**

**रहस्यं परमं देव्याः कृपया कथय प्रभो ।। ३**

श्री परशुराम ने कहा—हे सनातन परमेश्वर, हे देव ! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं, तो हे भगवन् ! देवी के परम रहस्य को कृपा-पूर्वक कहिये।

**विनार्चनं विना होमं विना न्यासं विना वलिं ।**

**विना गन्धं विना पुष्पं विना नित्योदितां क्रियां ।।४**

पूजन, होम, न्यास, वलि, गन्ध, पुष्प आदि के विना और विना नित्य कर्मों के—

**प्राणायामं विना ध्यानं विना भूत-विशोधनम् ।**

**विना दानं विना जापं येन काली प्रसीदति ।। ५**

प्राणायाम, ध्यान, भूत-शुद्धि, दान, जप आदि के विना जिससे काली प्रसन्न होती है (उसे कहिये) ।

शिव उवाच—

**पृष्टं त्वयोत्तमं प्राज्ञ ! भृगु-वंश-समुद्भव !**

**भक्तानामपि भक्तोऽसि त्वमेव साधयिष्यसि ।। ६**

श्री शिव ने कहा—भृगु-वंश में उत्पन्न हे वुद्धिमान् राम ! तुमने वहुत उत्तम वात पूछी है । भक्तों में तुम श्रेष्ठ भक्त हो, तुम्हीं साधना करोगे ।

**देवीं दानव-कोटिघ्नीं लीलया रुधिर-प्रियाम् ।**

**सदा स्तोत्र-प्रियामुग्रां काम-कौतुक-लालसां ।। ७**

खेल-खेल में करोड़ों राक्षसों को मारनेवाली, काम-क्रीडा की लालसा से युक्त, रक्त-प्रिया उग्र देवी को स्तोत्र सदैव प्रिय है—

**सर्वदानन्द - हृदयामासवोत्सव - मानसाम् ।**

**माध्वीक-मत्स्य-मांसानुरागिणीं वैष्णवीं पराम् ।। ८**

उसका हृदय सदैव आनन्द से पूर्ण रहता है, मद्य से उसका मन उल्लसित रहता है, माध्वीक नामक मद्य और मत्स्य-मांस आदि उसे प्रिय लगते हैं, वह परा वैष्णवी है—

**श्मशान-वासिनीं प्रेत-गण-नृत्य-महोत्सवाम् ।**

**योग-प्रभावां योगेशीं योगीन्द्र-हृदय-स्थिताम् ।। ९**

श्मशान में वह निवास करती है, प्रेत-गणों के नृत्यादि उसके महोत्सव हैं, योग-सिद्धि से वह युक्त है, योगों की वह

स्वामिनी है, महान् योगियों के हृदय में वह विराजमान रहती है—

**तामुग्र-कालिकां राम ! प्रसादयितुमर्हसि ।**

**तस्याः स्तोत्रं परं पुण्यं स्वयं काल्या प्रकाशितं ॥१०**

हे राम ! उस उग्र-कालिका को तुम्हें प्रसन्न करना चाहिये। उसका स्तोत्र अत्यन्त पुण्य-मय है। स्वयं काली ने उसे प्रकट किया है।

**तव तत् कथयिष्यामि श्रुत्वा वत्सावधारय ।**

**गोपनीयं प्रयत्नेन पठनीयं परात्परम् ॥११**

उसे मैं तुमसे कहूँगा। हे पुत्र ! उसे सुनकर हृदयंगम करो। प्रयत्न-पूर्वक उसे गुप्त रखना चाहिये और श्रेष्ठ से भी श्रेष्ठ उसे पढ़ना चाहिये।

**यस्यैक-काल-पठनात् सर्वे विघ्नाः समाकुलाः ।**

**नश्यन्ति दहने दीप्ते पतङ्गा इव सर्वतः ॥१२**

जिसके एक समय पढ़ने से ही समस्त विघ्न उसी प्रकार नष्ट हो जाते हैं, जिस प्रकार प्रज्वलित अग्नि में पतंगे सभी प्रकार भस्म हो जाते हैं।

**गद्य-पद्य-मयी वाणी तस्य गङ्गा-प्रवाह-वत् ।**

**तस्य दर्शन-मात्रेण वादिनो निष्प्रभां गताः ॥१३**

उसके पढ़नेवाले साधक की वाणी गङ्गा की धारा के समान गद्य-पद्य-मयी होती है और उसके दर्शन मात्र से वादी लोग हत-बुद्धि हो जाते हैं।

**तस्य हस्ते सदैवास्ति सर्व-सिद्धिर्न संशयः ।**

**राजानोऽपि च दासत्वं भजंते किं परे जनाः ॥१४**

सब सिद्धियाँ सदैव उसके हाथ में रहती हैं, इसमें सन्देह नहीं। राजा लोग तक उसकी दासता मानते हैं, फिर अन्य लोगों की क्या बात !

**निशीथे मुक्त-केशस्तु नग्नः शक्ति-समाहितः ।**
**मनसा चिंतयेत् कालीं महा-कालेन लालितां ॥१५**

रात्रि में मुक्त-केश और नग्न होकर शक्ति के साथ महा-काल द्वारा प्रसन्न काली का मन में ध्यान करे और—

**पठेत् सहस्र-नामाख्यं स्तोत्रं मोक्षस्य साधनं ।**
**प्रसन्ना कालिका तस्य पुत्रत्वेनानुकम्पते ॥१६**

मोक्ष के साधन-रूप सहस्र-नाम नामक स्तोत्र का पाठ करे, तो कालिका प्रसन्न होकर उस पर पुत्र-भाव से कृपा करती है।

**यथा ब्रह्मामृतैर्ब्रह्म - कुसुमैः पूजिता परा ।**
**प्रसीदति तथानेन स्तुता काली प्रसीदति ॥१७**

जिस प्रकार ब्रह्मामृत और ब्रह्म-कुसुमों से पूजित होकर परा-शक्ति प्रसन्न होती है, उसी प्रकार इस स्तोत्र से स्तुति किये जाने पर काली प्रसन्न होती है।

विनियोग—

**अस्य श्रीश्मशान-कालिका - सहस्रनाम - स्तोत्रस्य श्रीमहाकाल-भैरव ऋषिः । त्रिष्टुप् छन्दः । श्रीश्मशान-काली देवता । धर्मार्थ-काम-मोक्षार्थे पाठे विनियोगः ।**

श्री श्मशान-कालिका के इस सहस्रनाम-स्तोत्र के ऋषि श्री महाकाल-भैरव, छन्द त्रिष्टुप् और देवता श्रीश्मशान-काली हैं। इसका विनियोग धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के लिये पाठ करने में है।

ऋष्यादि-न्यास

श्रीमहा - काल - भैरव - ऋषये नमः शिरसि। त्रिष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे। श्रीश्मशान-काली-देवतायै नमः हृदि। धर्मार्थ-काम-मोक्षार्थे पाठे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

सहस्रनाम-स्तुति

श्मशान-कालिका काली भद्रकाली कपालिनी।
गुह्य-काली महा-काली कुरु-कुल्ला विरोधिनी ॥१
कालिका काल-रात्रिश्च महा-काल-नितम्बिनी।
काल-भैरव-भार्या च कुल-वर्त्म-प्रकाशिनी ॥२
कामदा कामिनी कन्या कमनीय-स्वरूपिणी।
कस्तूरी-रस-लिप्ताङ्गी कुञ्जरेश्वर-गामिनी ॥३
ककार-वर्ण-सर्वाङ्गी कामिनी काम-सुन्दरी।
कामार्त्ता काम-रूपा च काम-धेनुः कलावती ॥४
कांता काम-स्वरूपा च कामाख्या कुल-कामिनी।
कुलीना कुल-वत्यम्बा दुर्गा दुर्गति-नाशिनी ॥५
कौमारी कुलजा कृष्णा कृष्ण-देहा कृशोदरी।
कृशाङ्गी कुलिशाङ्गी च क्रीङ्कारी कमला कला ॥६
करालास्या कराली च कुल-कान्तापराजिता।
उग्रा उग्र-प्रभा दीप्ता विप्र-चित्ता महा-बला ॥७
नीला घना मेघ-नादा मात्रा मुद्रा मिताऽमिता।
ब्राह्मी नारायणी भद्रा सुभद्रा भक्त-वत्सला ॥८

माहेश्वरी च चामुण्डा वाराही नारसिंहिका ।
वज्रांगी वज्र-कंकाली नृ-मुंड-स्रग्विणी शिवा ।।९
मालिनी नर-मुण्डाली-गलद्रक्त-विभूषणा ।
रक्त-चन्दन-सिक्ताङ्गी सिंदूरारुण-मस्तका ।।१०
घोर-रूपा घोर-दंष्ट्रा घोरा घोर-तरा शुभा ।
महा-दंष्ट्रा महा-माया सुदन्ती युग-दन्तुरा ।।११
सुलोचना विरूपाक्षी विशालाक्षी त्रिलोचना ।
शारदेन्दु-प्रसन्नास्या स्फुरत्-स्मेराम्बुजेक्षणा ।।१२
अट्टहासा प्रफुल्लास्या स्मेर-वक्त्रा सुभाषिणी ।
प्रफुल्ल-पद्म-वदना स्मितास्या प्रिय-भाषिणी ।।१३
कोटराक्षी कुल-श्रेष्ठा महती बहु-भाषिणी ।
सुमतिः मतिश्चण्डा चण्ड-मुण्डाति-वेगिनी ।।१४
प्रचण्डा चण्डिका चण्डी चर्चिका चण्ड-वेगिनी ।
सुकेशी मुक्त-केशी च दीर्घ-केशी महा-कचा ।।१५
प्रेत-देह-कर्ण-पूरा प्रेत-पाणि-सुमेखला ।
प्रेतासना प्रिय-प्रेता प्रेत-भूमि-कृतालया ।।१६
श्मशान-वासिनी पुण्या पुण्यदा कुल-पण्डिता ।
पुण्यालया पुण्य-देहा पुण्य-श्लोका च पावनी ।।१७
पूता पवित्रा परमा परा पुण्य-विभूषणा ।
पुण्य-नाम्नी भीति-हरा वरदा खड्ग-पाशिनी ।।१८

नृ-मुण्ड-हस्ता शस्त्रा च छिन्नमस्ता सुनासिका ।
दक्षिणा श्यामला श्यामा शांता पीनोन्नत-स्तनी ।।१९

दिगम्बरा घोर-रावा सृक्कान्त-रक्त-वाहिनी ।
महा-रावा शिवा-संज्ञा निःसंगा मदनातुरा ।।२०

मत्ता प्रमत्ता मदना सुधा-सिन्धु-निवासिनी ।
अति-मत्ता महा-मत्ता सर्वाकर्षण-कारिणी ।।२१

गीत-प्रिया वाद्य-रता प्रेत-नृत्य-परायणा ।
चतुर्भुजा दश-भुजा अष्टादश-भुजा तथा ।।२२

कात्यायनी जगन्माता जगती–परमेश्वरी ।
जगद्-बन्धुर्जगद्धात्री जगदानन्द-कारिणी ।।२३

जगज्जीव-मयी हैम-वती माया महा-लया ।
नाग-यज्ञोपवीताङ्गी नागिनी नाग-शायिनी ।।२४

नाग-कन्या देव-कन्या गान्धारी किन्नरेश्वरी ।
मोह-रात्री महा-रात्री दारुणाभा सुरासुरी ।।२५

विद्या-धरी वसु-मती यक्षिणी योगिनी जरा ।
राक्षसी डाकिनी वेद-मयी वेद-विभूषणा ।।२६

श्रुति-स्मृतिर्महा-विद्या गुह्य-विद्या पुरातनी ।
चिताऽचिता स्वधा स्वाहा निद्रा तन्द्रा च पार्वती ।।२७

अर्पणा निश्चला लोला सर्व-विद्या-तपस्विनी ।
गङ्गा काशी शची सीता सती सत्य-परायणा ।।२८

नीतिः सुनीतिः सुरुचिस्तुष्टिः पुष्टिर्धृतिः क्षमा ।
वाणी बुद्धिर्महा-लक्ष्मी लक्ष्मीर्नील-सरस्वती ॥२९
स्रोतस्वती स्रोत-वती मातङ्गी विजया जया ।
नदी सिन्धुः सर्व-मयी तारा शून्य-निवासिनी ॥३०
शुद्धा तरंगिणी मेधा लाकिनी बहु-रूपिणी ।
सदानन्द-मयी सत्या सर्वानन्द-स्वरूपिणी ॥३१
स्थूला सूक्ष्मा सूक्ष्म-तरा भगवत्यनुरूपिणी ।
परमार्थ-स्वरूपा च चिदानन्द-स्वरूपिणी ॥३२
सुनन्दा नन्दिनी स्तुत्या स्तवनीया स्वभाविनी ।
रंकिणी टंकिणी चित्रा विचित्रा चित्र-रूपिणी ॥३३
पद्मा पद्मालया पद्म-मुखी पद्म-विभूषणा ।
शाकिनी हाकिनी क्षान्ता राकिणी रुधिर-प्रिया ॥३४
भ्रान्तिर्भवानी रुद्राणी मृडानी शत्रु-मर्दिनी ।
उपेन्द्राणी महेशानी ज्योत्स्ना चेन्द्र-स्वरूपिणी ॥३५
सूर्य्यात्मिका रुद्र-पत्नी रौद्री स्त्री प्रकृतिः पुमान् ।
शक्तिः सूक्तिर्मति-मती भुक्तिर्मुक्तिः पति-व्रता ॥३६
सर्वेश्वरी सर्व-माता सर्वाणी हर-वल्लभा ।
सर्वज्ञा सिद्धिदा सिद्धा भाव्या भव्या भयापहा ॥३७
कर्त्री हर्त्री पालयित्री शर्वरी तामसी दया ।
तमिस्रा यामिनीस्था च स्थिरा धीरा तपस्विनी ॥३८
चार्वङ्गी चंचला लोल-जिह्वा चारु-चरित्रिणी ।
त्रपा त्रपा-वती लज्जा निर्लज्जा ह्रीं रजोवती ॥३९

सत्त्व-वती धर्म-निष्ठा श्रेष्ठा निष्ठुर-वादिनी ।
गरिष्ठा दुष्ट-संहर्त्री विशिष्टा श्रेयसी घृणा ॥४०

भीमा भयानका भीम-नादिनी भीः प्रभा-वती ।
वागीश्वरी श्रीर्यमुना यज्ञ-कर्त्री यजुः-प्रिया ॥४१

ऋक्-सामाथर्व-निलया रागिणी शोभन-स्वरा ।
कल-कण्ठी कम्बु-कण्ठी वेणु-वीणा-परायणा ॥४२

वशिनी वैष्णवी स्वच्छा धात्री त्रि-जगदीश्वरी ।
मधुमती कुण्डलिनी ऋद्धिः सिद्धिः शुचि-स्मिता ॥४३

रम्भोर्वशी रती रामा रोहिणी रेवती मघा ।
शङ्खिनी चक्रिणी कृष्णा गदिनी पद्मिनी तथा ॥४४

शूलिनी परिघास्त्रा च पाशिनी शार्ङ्ग-पाणिनी ।
पिनाक-धारिणी धूम्रा सुरभी वन-मालिनी ॥४५

रथिनी समर-प्रीता वेगिनी रण-पण्डिता ।
जटिनी वज्रिणी नीला लावण्याम्बुधि-चन्द्रिका ॥४६

बलि-प्रिया महा-पूज्या पूर्णा दैत्येन्द्र-मन्थिनी ।
महिषासुर-संहन्त्री वासिनी रक्त-दन्तिका ॥४७

रक्तपा रुधिराक्ताङ्गी रक्त-खर्पर-हस्तिनी ।
रक्त-प्रिया मांस-रुचिरासवासक्त-मानसा ॥४८

गलच्छोणित-मुण्डालि-कण्ठ-माला-विभूषणा ।
शवासना चितान्तःस्था माहेशी वृष-वाहिनी ॥४९

व्याघ्र-त्वगम्बरा चीर-चेलिनी सिंह-वाहिनी ।
वाम-देवी महा-देवी गौरी सर्वज्ञ-भाविनी ॥५०

बालिका तरुणी वृद्धा वृद्ध-माता जरातुरा ।
सुभ्रुर्विलासिनी ब्रह्म-वादिनी ब्राह्मणी मही ॥५१

स्वप्नावती चित्र-लेखा लोपा-मुद्रा सुरेश्वरी ।
अमोघाऽरुन्धती तीक्ष्णा भोगवत्यनुवादिनी ॥५२

मन्दाकिनी मन्द-हासा ज्वालामुख्यसुरान्तका ।
मानदा मानिनी मान्या माननीया मदोद्धता ॥५३

मदिरा मदिरोन्मादा मेध्या नव्या प्रसादिनी ।
सुमध्यानन्त-गुणिनी सर्व-लोकोत्तमोत्तमा ॥५४

जयदा जित्वरा जेत्री जयश्रीर्जय-शालिनी ।
सुखदा शुभदा सत्या सभा-संक्षोभ-कारिणी ॥५५

शिव-दूती भूति-मती विभूतिर्भीषणानना ।
कौमारी कुलजा कुन्ती कुल-स्त्री कुल-पालिका ॥५६

कीर्तिर्यशस्विनी भूषा भूष्या भूत-पति-प्रिया ।
सगुणा निर्गुणा धृष्टा निष्ठा काष्ठा प्रतिष्ठिता ॥५७

धनिष्ठा धनदा धन्या वसुधा स्व-प्रकाशिनी ।
उर्वी गुर्वी गुरु-श्रेष्ठा सगुणा त्रिगुणात्मिका ॥५८

महा-कुलीना निष्कामा सकामा काम-जीवना ।
काम-देव-कला रामाभिरामा शिव-नर्तकी ॥५९

चिन्तामणिः कल्प-लता जाग्रती दीन-वत्सला ।
कार्त्तिकी कृत्तिका कृत्या अयोध्या विषमा समा ॥६०

सुमंत्रा मंत्रिणी घूर्णा ह्लादिनी क्लेश-नाशिनी ।
त्रैलोक्य-जननी हृष्टा निर्मांसा मनोरूपिणी ॥६१

तडाग-निम्न-जठरा शुष्क-मांसास्थि-मालिनी ।
अवन्ती मथुरा माया त्रैलोक्य-पावनीश्वरी ॥६२

व्यक्ताव्यक्तानेक-मूर्तिः शर्वरी भीम-नादिनी ।
क्षेमङ्करी शंकरी च सर्व-सम्मोह-कारिणी ॥६३

ऊर्ध्व-तेजस्विनी क्लिन्ना महा-तेजस्विनी तथा ।
अद्वैता भोगिनी पूज्या युवती सर्व-मङ्गला ॥६४

सर्व-प्रियंकरी भोग्या धरणी पिशिताशना ।
भयङ्करी पाप-हरा निष्कलङ्का वशङ्करी ॥६५

आशा तृष्णा चन्द्र-कला निद्रिका वायु-वेगिनी ।
सहस्र-सूर्य-संकाशा चन्द्र-कोटि-सम-प्रभा ॥६६

वह्नि-मण्डल-मध्यस्था सर्व-तत्व-प्रतिष्ठिता ।
सर्वाचार-वती सर्व-देव-कन्याधिदेवता ॥६७

दक्ष-कन्या दक्ष-यज्ञ-नाशिनी दुर्ग-तारिणी ।
इज्या पूज्या विभीर्भूतिः सत्कीर्तिर्ब्रह्म-रूपिणी ॥६८

रम्भोरुश्चतुरा राका जयन्ती करुणा कुहुः ।
मनस्विनी देव-माता यशस्या ब्रह्म-चारिणी ॥६९

ऋद्धिदा वृद्धिदा वृद्धिः सर्वाद्या सर्व-दायिनी ।
आधार-रूपिणी ध्येया मूलाधार-निवासिनी ॥७०

आज्ञा प्रज्ञा-पूर्ण-मनाश्चन्द्र-मुख्यानुकूलिनी ।
वावदूका निम्न-नाभिः सत्या सन्ध्या दृढ़-व्रता ॥७१

आन्वीक्षिकी दंड-नीतिस्त्रयी त्रि-दिव-सुन्दरी ।
ज्वलिनी ज्वालिनी शैल-तनया विन्ध्य-वासिनी ॥७२

अमेया खेचरी धैर्या तुरीया विमलातुरा ।
प्रगल्भा वारुणीच्छाया शशिनी विस्फुलिङ्गिनी ॥७३

भुक्ति सिद्धि सदा प्राप्तिः प्राकाम्या महिमाणिमा ।
इच्छा-सिद्धिर्विसिद्धा च वशित्वोर्ध्व-निवासिनी ॥७४

लघिमा चैव गायत्री सावित्री भुवनेश्वरी ।
मनोहरा चिता दिव्या देव्युदारा मनोरमा ॥७५

पिंगला कपिला जिह्वा-रसज्ञा रसिका रसा ।
सुषुम्नेडा भोगवती गान्धारी नरकान्तका ॥७६

पाञ्चाली रुक्मिणी राधाराध्या भीमाधिराधिका ।
अमृता तुलसी वृन्दा कैटभी कपटेश्वरी ॥७७

उग्र-चण्डेश्वरी वीर-जननी वीर-सुन्दरी ।
उग्र-तारा यशोदाख्या देवकी देव-मानिता ॥७८

निरञ्जना चित्र-देवी क्रोधिनी कुल-दीपिका ।
कुल-वागीश्वरी वाणी मातृका द्राविणी द्रवा ॥७९

योगेश्वरी-महा-मारी भ्रामरी विन्दु-रूपिणी ।
दूती प्राणेश्वरी गुप्ता बहुला चामरी-प्रभा ॥८०

कुब्जिका ज्ञानिनी ज्येष्ठा भुशुंडी प्रकटा तिथिः ।
द्रविणी गोपिनी माया काम-वीजेश्वरी क्रिया ॥८१

शांभवी केकरा मेना मूषलास्त्रा तिलोत्तमा ।
अमेय-विक्रमा क्रूरा सम्पत्-शाला त्रिलोचना ॥८२

सुस्थी हव्य-वहा प्रीतिरुष्मा धूम्रार्चिरङ्गदा ।
तपिनी तापिनी विश्वा भोगदा धारिणी धरा ॥८३

त्रिखंडा बोधिनी वश्या सकला शब्द-रूपिणी ।
बीज-रूपा महा-मुद्रा योगिनी योनि-रूपिणी ॥८४

अनङ्ग - मदनानङ्ग - लेखानङ्ग - कुशेश्वरी ।
अनङ्ग-मालिनी कामेश्वरी सर्वार्थ-साधिका ॥८५

सर्व-मन्त्र-मयी मोहिन्यरुणानङ्ग - मोहिनी ।
अनङ्ग - कुसुमानङ्ग - मेखलानङ्ग - रूपिणी ॥८६

वज्रेश्वरी च जयिनी सर्व-द्वन्द्व-क्षयङ्करी ।
षडङ्ग-युवती योग-युक्ता ज्वालांशु-मालिनी ॥८७

दुराशया दुराधारा दुर्जया दुर्ग-रूपिणी ।
दुरन्ता दुष्कृति-हरा दुर्ध्येया दुरतिक्रमा ॥८८

हंसेश्वरी त्रिकोणस्था शाकम्भर्यनुकम्पिनी ।
त्रिकोण-निलया नित्या परमामृत-रञ्जिता ॥८९

महा-विद्येश्वरी श्वेता भेरुण्डा कुल-सुन्दरी ।
त्वरिता भक्त-संसक्ता भक्ति-वश्या सनातनी ॥९०

भक्तानन्द-मयी भक्ति-भाविका भक्त-शङ्करी ।
सर्व-सौन्दर्य-निलया सर्व-सौभाग्य-शालिनी ॥९१

सर्व-सौभाग्य-भवना सर्व-सौख्य-निरूपिणी ।
कुमारी-पूजन-रता कुमारी-व्रत-चारिणी ॥९२

कुमारी-भक्ति-सुखिनी कुमारी-रूप-धारिणी ।
कुमारी-पूजक-प्रीता कुमारी-प्रीतिदा प्रिया ॥९३

कुमारी-सेवकासंगा कुमारी-सेवकालया ।
आनन्द-भैरवी बाला भैरवी वटुक-भैरवी ॥९४

श्मशान-भैरवी काल-भैरवी पुर-भैरवी ।
महा-भैरव-पत्नी च परमानन्द-भैरवी ॥९५

सुधानन्द-भैरवी च उन्मादानन्द-भैरवी ।
मुक्तानन्द-भैरवी च तथा तरुण-भैरवी ॥९६

ज्ञानानन्द-भैरवी च अमृतानन्द-भैरवी ।
महा-भयङ्करी तीव्रा तीव्र-वेगा तपस्विनी ॥९७

त्रिपुरा परमेशानी सुन्दरी पुर-सुन्दरी ।
त्रिपुरेशी पञ्च-दशी पञ्चमी पुर-वासिनी ॥९८

महा-सप्त-दशी चैव षोडशी त्रिपुरेश्वरी ।
महांकुश-स्वरूपा च महा-चक्रेश्वरी तथा ॥९९

नव-चक्रेश्वरी चक्रेश्वरी त्रिपुर-मालिनी ।
राज-राजेश्वरी धीरा महा-त्रिपुर-सुन्दरी ॥१००

सिन्दूर - पूर-रुचिरा श्रीमत्त्रिपुर - सुन्दरी ।
सर्वाङ्ग-सुन्दरी रक्ता रक्त-वस्त्रोत्तरीयिणी ॥१०१

जवा-यावक-सिन्दूर-रक्त - चन्दन - धारिणी ।
जवा-यावक-सिन्दूर-रक्त - चन्दन-रूप - धृक् ॥१०२

चामरी बाल-कुटिल-निर्मल-श्याम - केशिनी ।
वज्र-मौक्तिक-रत्नाढ्य-किरीट - मुकुटोज्ज्वला ॥१०३

रत्न - कुण्डल - संसक्त-स्फुरद्-गण्ड-मनोरमा ।
कुञ्जरेश्वर-कुम्भोत्थ-मुक्ता-रञ्जित-नासिका ॥१०४

मुक्ता-विद्रुम-माणिक्य-हाराढ्य-स्तन-मण्डला ।
सूर्य-कान्तेन्दु-कान्ताढ्य-स्पर्शाश्म-कण्ठ-भूषणा ॥१०५

वीजपूर-स्फुरद् - वीज - दन्त - पंक्तिरनुत्तमा ।
काम-कोदण्डकाभुग्न-भ्रू - कटाक्ष - प्रवर्षिणी ॥१०६

मातङ्ग-कुम्भ-वक्षोजा लसत्कोक - नदेक्षणा ।
मनोज्ञ-शष्कुली - कर्णा हंसी-गति-विडम्बिनी ॥१०७

पद्म-रागांगद - ज्योतिर्दोश्चतुष्क-प्रकाशिनी ।
नाना-मणि - परिस्फूर्जच्छुद्ध-कांचन-कंकणा ॥१०८

नागेन्द्र-दन्त-निर्माण - वलयांचित - पाणिनी ।
अंगुरीयक-चित्राङ्गी विचित्र-क्षुद्र-घण्टिका ॥१०९

पट्टाम्बर-परीधाना    कल-मञ्जीर-शिंजिनी ।
कर्पूरागरु - कस्तूरी - कुंकुम - द्रव - लेपिता ॥११०
विचित्र-रत्न-पृथिवी-कल्प-शाखि-तल-स्थिता ।
रत्न-द्वीप-स्फुरद् - रक्त-सिंहासन - विलासिनी ॥१११
षट्-चक्र - भेदन - करी परमानन्द - रूपिणी ।
सहस्र - दल-पद्मान्तश्चन्द्र - मण्डल - वर्त्तिनी ॥११२
ब्रह्म-रूप - शिव-क्रोड - नाना-सुख-विलासिनी ।
हर-विष्णु - विरिंचीन्द्र - ग्रह-नायक-सेविता ॥११३
शिवा शैवा च रुद्राणी तथैव शिव-वादिनी ।
मातङ्गिनी श्रीमती च तथैवानन्द-मेखला ॥११४
डाकिनी योगिनी चैव तथोपयोगिनी मता ।
माहेश्वरी वैष्णवी च भ्रामरी शिव-रूपिणी ॥११५
अलम्बुषा वेग-वती क्रोध-रूपा सु-मेखला ।
गान्धारी हस्ति-जिह्वा च इडा चैव शुभङ्करी ॥११६
पिङ्गला ब्रह्म-सूत्री च सुषुम्णा चैव गन्धिनी ।
आत्म-योनिर्ब्रह्म - योनिर्जगद्-योनिरयोनिजा ॥११७
भग - रूपा भग-स्थात्री भगिनी भग - रूपिणी ।
भगात्मिका भगाधार - रूपिणी भग-मालिनी ॥११८
लिंगाख्या चैव लिंगेशी त्रिपुरा-भैरवी तथा ।
लिंग-गीतिः सुगीतिश्च लिंगस्था लिंग-रूप-धृक् ॥११९

लिंग-माना लिंग-भवा लिंग-लिंगा च पार्वती ।
भगवती कौशिकी च प्रेमा चैव प्रियंवदा ॥१२०

गृध्र-रूपा शिवा-रूपा चक्रिणी चक्र-रूप-धृक् ।
लिंगाभिधायिनी लिंग-प्रिया लिंग-निवासिनी ॥१२१

लिंगस्था लिंगनी लिंग-रूपिणी लिंग-सुन्दरी ।
लिंग-गीतिर्महा-प्रीता भग-गीतिर्महा-सुखा ॥१२२

लिंग-नाम-सदानन्दा भग-नाम-सदा-रतिः ।
लिंग-माला-कण्ठ-भूषा भग-माला-विभूषणा ॥१२३

भग-लिंगामृत-प्रीता भग-लिंगामृतात्मिका ।
भग-लिंगार्चन-प्रीता भग-लिंग-स्वरूपिणी ॥१२४

भग-लिंग-स्वरूपा च भग-लिंग-सुखावहा ।
स्वयम्भू-कुसुम-प्रीता स्वयम्भू-कुसुमार्चिता ॥१२५

" कुसुम-प्राणा " कुसुमोत्थिता ।
" कुसुम-स्नाता " पुष्प-तर्पिता ॥१२६

" पुष्प-घटिता " पुष्प-धारिणी ।
" पुष्प-तिलका " पुष्प-चर्चिता ॥१२७

" पुष्प-निरता " कुसुम-ग्रहा ।
" पुष्प-यज्ञांगा " कुसुमात्मिका ॥१२८

" पुष्प-निचिता " कुसुम-प्रिया ।
" कुसुमादान - लालसोन्मत्त - मानसा ॥१२९

स्वयम्भू-कुसुमानन्द - लहरी-स्निग्ध - देहिनी ।
" कुसुमाधारा स्वयम्भू - कुसुमा - कला ॥१३०

" पुष्प-निलया " पुष्प-वासिनी ।
" कुसुम-स्निग्धा " कुसुमात्मिका ॥१३१

" पुष्प-कारिणी स्वयम्भू-पुष्प-पाणिका ।
" कुसुम-ध्याना " कुसुम-प्रभा ॥१३२

" कुसुम-ज्ञाना " पुष्प-भोगिनी ।
" कुसुमोल्लासा " पुष्प-वर्षिणी ॥१३३

" कुसुमोत्साहा " पुष्प-रूपिणी ।
" कुसुमोन्मादा " पुष्प-सुन्दरी ॥१३४

" कुसुमाराध्या " कुसुमोद्भवा ।
" कुसुम-व्यग्रा " पुष्प-पूर्णिता ॥१३५

" पूजक-प्रज्ञा " होतृ-मातृका ।
" दातृ-रक्षित्री " रक्त-तारिका ॥१३६

" पूजक-ग्रस्ता " पूजक-प्रिया ।
" वन्दकाधारा " निन्दकान्तका ॥१३७

" प्रद-सर्वस्वा " प्रद-पुत्रिणी ।
" प्रद-सस्मेरा " प्रद-शरीरिणी ॥१३८

सर्व-कालोद्भव-प्रीता सर्व-कालोद्भवात्मिका ।
सर्व-कालोद्भवोद्भावा सर्व-कालोद्भवोद्भवा ॥१३९

कुण्ड-पुष्प - सदा-प्रीतिर्गोल-पुष्प - सदा-रतिः ।
कुण्ड-गोलोद्भव-प्राणा कुण्ड-गोलोद्भवात्मिका ।।१४०

स्वयम्भुवा शिवा धात्री पावनी लोक-पावनी ।
कीर्तिर्यशस्विनी मेधा विमेधा शुक्र - सुन्दरी ।।१४१

अश्विनी कृत्तिका पुष्या तैजस्का चन्द्र-मण्डला ।
सूक्ष्माऽसूक्ष्मा वलाका च वरदा भय-नाशिनी ।।१४२

वरदाऽभयदा चैव मुक्ति - बन्ध - विनाशिनी ।
कामुका कामदा कान्ता कामाख्या कुल-सुन्दरी ।।१४३

दुःखदा सुखदा मोक्षा मोक्षदार्थ - प्रकाशिनी ।
दुष्टादुष्ट - मतिश्चैव सर्व-कार्य - विनाशिनी ।।१४४

शुक्राधारा शुक्र-रूपा शुक्र-सिन्धु-निवासिनी ।
शुक्रालया शुक्र - भोगा शुक्र-पूजा-सदा-रतिः ।।१४५

शुक्र-पूज्या शुक्र-होम-सन्तुष्टा शुक्र - वत्सला ।
शुक्र-मूर्त्तिः शुक्र-देहा शुक्र - पूजक - पुत्रिणी ।।१४६

शुक्रस्था शुक्रिणी शुक्र - संस्पृहा शुक्र-सुन्दरी ।
शुक्र-स्नाता शुक्र-करी शुक्र-सेव्याति-शुक्रिणी ।।१४७

महा-शुक्रा शुक्र - भवा शुक्र-वृष्टि-विधायिनी ।
शुक्राभिधेया शुक्रार्हा शुक्र - वन्दक - वन्दिता ।।१४८

शुक्रानन्द - करी शुक्र - सदानन्दाभिधायिका ।
शुक्रोत्सवा सदा-शुक्र - पूर्णा शुक्र - मनोरमा ।।१४९

शुक्र-पूजक - सर्वस्वा शुक्र-निन्दक - नाशिनी ।
शुक्रात्मिका शुक्र-सम्पत् शुक्राकर्षण - कारिणी ॥१५०

शारदा साधक - प्राणा साधकासक्त - मानसा ।
साधकोत्तम - सर्वस्वा साधकाभक्त - रक्तपा ॥१५१

साधकानन्द-सन्तोषा साधकानन्द - कारिणी ।
आत्म - विद्या ब्रह्म-विद्या पर-ब्रह्म-स्वरूपिणी ॥१५२

त्रिकूटस्था पञ्च - कूटा सर्व-कूट - शरीरिणी ।
सर्व-वर्ण-मयी वर्ण - जप-माला - विधायिनी ॥१५३

इति श्रीकालिका-नाम-साहस्रं शक्ति-भाषितम् ।
गुह्याद्-गुह्य-तरं साक्षात् महा-पातक-नाशनम् ॥१५४

शिव द्वारा कहा हुआ यह श्री कालिका सहस्रनाम गुप्त से भी गुप्त है और बड़े-से-भी बड़े पाप को नष्ट करनेवाला है।

फल-श्रुति

पूजा - काले निशीथे च सन्ध्ययोरुभयोरपि ।
यः पठेत् साधक-श्रेष्ठो त्रैलोक्य-विजयी भवेत् ॥ १

पूजा-काल में, रात्रि में और दोनों संध्याओं में भी जो श्रेष्ठ साधक इसका पाठ करता है, वह तीनों लोकों में विजय प्राप्त करता है।

यः पठेत् पाठयेद् वापि शृणोति श्रावयेदथ ।
सर्व-पाप-विनिर्मुक्तः स याति कालिका - पुरम् ॥ २

जो इसे पढ़ता या पढ़वाता है और सुनता या सुनवाता है, वह सब पापों से छूटकर कालिका के लोक को जाता है।

श्रद्धयाऽश्रद्धया वापि यः कश्चिन्मानवः स्मरेत् ।
दुर्गं दुर्ग-शतं तीर्त्वा स याति परमां गतिम् ।। ३

श्रद्धा या अश्रद्धा से जो कोई भी मनुष्य इसका स्मरण करता है, वह सैकड़ों कठिन विघ्नों को पार कर परम गति को प्राप्त करता है।

वंध्या वा काक-वंध्या वा मृत-वत्सा च यांगना ।
श्रुत्वा स्तवमिदं पुत्रान् लभते चिर-जीविनः ।। ४

वन्ध्या, काक-वन्ध्या या मृत-वत्सा जो भी स्त्री इस स्तोत्र को सुनती है, वह दीर्घ-जीवी पुत्रों को प्राप्त करती है।

यं यं कामयते कामं पठन् स्तोत्रमनुत्तमम् ।
देवी-पाद-प्रसादेन तत्तदाप्नोति निश्चितम् ।। ५

इस स्तोत्र को पढ़ता हुआ मनुष्य जिस-जिस कामना की इच्छा करता है, वह उस-उसको देवी के चरणों की कृपा से निश्चित रूप से प्राप्त करता है।

स्वयम्भू-कुसुमैः शुक्रैः सुगन्धि-कुसुमान्वितः ।
जवा-यावक - सिन्दूर - रक्त - चन्दन - संयुतैः ।।६
मत्स्य-मांसादिभिर्वापि मधु-माक्षिक-पायसैः ।
भक्त्यापनीतैर्मन्त्रेण शोधितैः शक्तिभिः सह ।।७
पञ्चोपचार - नैवेद्यं बलिभिर्बहु - शोभितैः ।
धूप-दीपैर्महादेवीं पूजयित्वा मनोरमैः ।।८
जप्त्वा महा-मनुं स्तोत्रं पठेद् भक्ति - परायणः ।
अनन्य-चेता स्थिर-धीः मुक्त - केशो दिगम्बरः ।।९

शवारूढ़श्चितास्थो वा श्मशानालयमागतः ।
शून्यालय-गतो वापि शय्यास्थो वापि साधकः ॥१०
स भवेत् कालिका-पुत्र इति ख्यातमुपागतः ।
सर्व-विद्या-वतां श्रेष्ठो धनेन च धनाधिपः ॥११
वायु-तुल्य-बलो लोके दुर्जयः शत्रु-मर्दनः ।
सर्व-सङ्कटमुत्तीर्णः सर्व-सिद्धि-समन्वितः ॥१२
मधुमत्या स्वयं देव्या सेव्यमाना सुरोपमाः ।
महेश इव योगीन्द्र सर्व-सत्व-पुरस्कृतः ॥१३
कामिनी काम-रूपोऽसौ सर्वाकर्षण-कारकः ।
जल-सूर्येन्दु-वायूनां स्तम्भको राज-वल्लभः ॥१४
यशस्वी सत्कविर्धीमान् सन्मन्त्रो कोकिल-स्वरः ।
बहु-पुत्री गजाश्वानामीश्वरो धार्मिकः कृती ॥१५
मार्कण्डेय इवायुष्मान् जरा-पलित-वर्जितः ।
नव-यौवन-युक्तः स्यादयुतावधिको यदि ॥१६
बहु किं कथ्यते तस्य पठ स्तवमनुत्तमम् ।
न किंचिद् दुर्लभं लोके यद्यन्मनसि कल्पितम् ॥१७
ब्रह्म-हत्या सुरा-पानं स्तेयं गुर्वङ्गना-गमः ।
सर्वमाशु तरत्येव स्तवस्यास्य प्रसादतः ॥१८
पर-दार-परो वापि जप्त्वा मन्त्रं पठन् स्तवम् ।
कुबेर इव वित्ताढ्यो जायते साधकोत्तमः ॥१९

अष्टोत्तर-शतं जप्त्वा योनिमामन्त्र्य मन्त्र-वित् ।
सङ्गम्य पठनादस्य सर्व - विघ्नेश्वरो भवेत् ॥२०

दिगम्बरो मुक्त - केशः शय्यास्थो मैथुने नरः ।
जप्त्वा स्तुत्वा महाकालीं खेचरो जायतेऽचिरात्॥२१

शुक्रोत्सारण - काले च जप - पूजा - परायणः ।
श्मशान-कालिकां स्तुत्वा वाणी-वत्स कविर्भवेत्॥२२

आलोकयन् चिन्तयित्वा विवस्त्रां पर-योषिताम् ।
जप्त्वा स्तुत्वा भगवतीं सर्व - पापैः प्रमुच्यते ॥२३

सुरतेषु मनुं जप्त्वा स्तुत्वा कालीं शिवात्मिकाम् ।
सर्व - पापैर्विनिर्मुक्तो मानवा स्थात्द्युकोपमाः ॥२४

कुहू - पूर्णेन्दु - संक्रान्ति - चतुर्दश्यष्टमी च ।
नवम्यां मङ्गल - दिने पठेत् स्तोत्रं सुसाधकः ॥२५

भौमावास्यां निशीथे च चतुष्पथ - गतो नरः ।
माष-भक्त-बलिं दद्यात् सदग्ध-मीन-शोणितम् ॥२६

अष्टोत्तर-शतं जप्त्वा पठेन्नाम-सहस्त्रकम् ।
सौदर्शने भवत्याशु षण्मासाभ्यास - योगतः ॥२७

येन केन प्रकारेण काली - स्तुति - परायणः ।
स्तम्भयेदखिलान् लोकान्राजानमपि मोहयेत् ॥२८

आकर्षयेद् देव-कन्यां वशयेदपि केशवम् ।
मारयेदखिलान् द्वेष्टान् उच्चाटयति शत्रवान् ॥२६

नर-मार्जार - महिष-छाग - मूषिक - शोणितैः ।
सास्थि - मांसैः स-मधुभिः सपानैर्दुग्ध-पायसैः ॥३०

योनि - क्षालन - तोयेन भग - लिङ्गामृतेन च ।
शुक्रैः पूजा-जपान्ते यः कालीं सन्तर्प्य साधकः ॥३१

सहस्र-नामभिर्दिव्यैः स्तोत्रैः भक्ति - परायणः ।
श्मशान-कालिका तस्य सर्वत्र हितकारिणी ॥३२

पर-निन्दा-पर - द्रोह - परिवाद - पराय च ।
खलाय पर-तन्त्राय भ्रष्टाय साधकाय च ॥३३

शिवाभक्ताय दुष्टाय दुःखदाय दुरात्मने ।
काली-भक्ति-विहीनाय पर-दार-रताय च ॥३४

पूजा-जप - विहीनाय स्त्री-सुरा - निन्दकाय च ।
न स्तवं दर्शयेद् दिव्यं संदर्श्य शिवहा भवेत् ॥३५

कुलीनाय माहेशाय दुर्गा - भक्ति - पराय च ।
वैष्णवाय विशुद्धाय भक्त-भक्ताय मन्त्रिणे ॥३६

अद्वैतानन्द - युक्ताय निवेदन - रताय च ।
दद्यात् स्तोत्रं महा-काल्याः साधकाय शिवाज्ञया ॥३७

गुरु-विष्णु महेशानि ! अभेदेन महेश्वरि !
सन्मन्त्रं भावयेन्मन्त्री महेशः स्यान्न संशयः ॥३८

स शाक्तः शिव-भक्तस्स स एव वैष्णवोत्तमः ।
सम्पूज्य स्तौति यः काली मद्वैत-भावमावहः ॥३९

देव्यानन्दो सदानन्दो देवी-भक्तो च भक्तिमान् ।
स एव धन्यो तस्यार्थे महेशो व्यग्र-मानसः ॥४०

कामयित्वा यथा कामः स्तवमेनमुदीरयेत् ।
सर्व-पाप-विनिर्मुक्तो जायते मदनोपमः ॥४१

चक्रं वा स्तवमेनं वा धारयेदङ्ग-संगतिम् ।
विलिख्य विधिवत् साधुः स एव कालिका-तनुः ॥४२

देव्यै निवेदितं यद्यन् तस्यां संभक्षयेन्नरः ।
दिव्य-देह-धरो भूत्वा देव्या पार्श्व-चरो भवेत् ॥४३

नैवेद्य-निन्दकान् दृष्ट्वा नृत्यन्ति योगिनी-गणाः ।
रक्त-पानोद्यताः सर्वाः मांसास्थि-चरणोद्यताः ॥४४

तस्मान्निवेदितं द्रव्यैः दृष्ट्वा श्रुत्वा च मानवः ।
न निन्देन्मनसा वाचा कुष्ठ-व्याधि-परो भवेत् ॥४५

आत्मानं कालिकात्मानं भावयन् स्तौति यः सदा ।
शिव-रूपं गुरुं ध्यात्वा स एव च सदा-शिवः ॥४६

यस्यालये तिष्ठति नमेत् स्तोत्रं भवान्या लिखितं विधिज्ञैः ।
गोरोचनालक्तक-कुंकुमारक्त-सिन्दूर-कर्पूर-मधु-द्रवेण ॥४७

न तत्र चौरस्य भयं न दस्योर्न
चोरगस्याशनि - वह्नि-भीतिः ।
उत्पात-वायोरपि नात्र शङ्का
लक्ष्मी स्वयं तत्र वसेद् लीलया ॥४८

स्तोत्रं पठेदेतदनन्त-पुण्यं काली—
पदाम्भोज-परो मनुष्यः ।।४९

विधान-पूजा-फलमेव सम्यक्
प्राप्नोति सम्पूर्ण-मनोरथोऽसौ ।।५०

श्रीकालिका-कुल-सर्वस्वे श्रीशिव-परशुराम-सम्वादे
श्रीश्मशान-कालिका-सहस्रनाम-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।
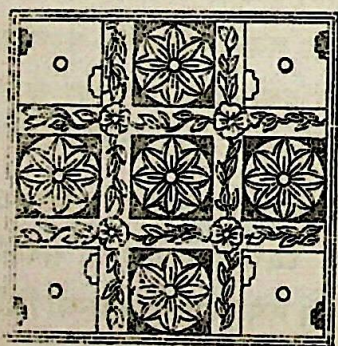
## पूर्व-पीठिका के पाठ-भेद

'पूर्व-पीठिका' में प्रकाशित १७ श्लोक ही हस्त-लिखित प्रति में भी मिले हैं, केवल १४ व श्लोक में यह अन्तर है कि हस्त-लिखित प्रति में उसका दूसरा चरण 'राजानोऽपि' इत्यादि प्रथम-चरण के स्थान पर है और 'तस्य हस्ते' आदि दूसरे चरण के स्थान पर। अन्य 'पाठान्तर' जो ग्राह्य हैं, निम्न प्रकार हैं—

| श्लोक-चरण | मूल पाठ | पाठान्तर |
|---|---|---|
| १-१ | सर्व-मन्त्रो | सर्व-तन्त्रो |
| १-२ | पदमुत्तमम् | मिदमुत्तमम् |
| ५-२ | विना दानं विना जापं | विना जपं विना ज्ञानं |
| ७-२ | लालसां | मानसां |
| ८-१ | हृदयामासवोत्सव | हृदयां साधकासक्त |
| ६-२ | योगेशीं | योगीशीं |
| १५-१ | केशस्तु | केशश्च |
| ,, | समाहितः | समन्वितः |
| १७-१ | परा | पुरा |
| १७-२ | प्रसीदति तथानेन | प्रसादिता तथा तेन |

१७ वें श्लोक का दूसरा पाठान्तर तभी ग्राह्य है, जब श्लोक में आया 'ब्रह्मा' शब्द तृतीया विभक्ति में (अर्थात् 'ब्रह्मणा') हो अन्यथा मूल पाठ ही सार्थक होने से ग्राह्य है।

## 'सहस्रनाम स्तोत्र' के पाठ-भेद

| श्लोक-चरण | मूल पाठ | पाठान्तर |
|---|---|---|
| ३-१ | स्वरूपिणी | विभाविनी |
| ३-२ | लिप्ताङ्गी | नीलाङ्गी |
| ५-१ | कामिनी | पालिनी |

| | | |
|---|---|---|
| ५-२ | दुर्गति | दुर्गति |
| ६-२ | कुलिशाङ्गी | कुल-शार्ङ्गी |
| ८-१ | मिताऽमिता | मिताऽसिता |
| ११-१ | महा-दंष्ट्रा महा-माया | महा-घोरा महा-दंष्ट्रा |
| १२-२ | स्मेराम्बुजेक्षणा | स्मेर-मुखाम्बुजा |
| १३-१ | स्मेर-वक्त्रा | सत्य-वक्त्रा |
| १३-२ | स्मितास्या | सुधास्या |
| १४-१ | वहु-भाषिणी | कुल-भाषिणी |
| १५-२ | महा-कचा | महत्कचा |
| १७-१ | कुल-पण्डिता | कुल-मण्डिता |
| १८-२ | पाशिनी | पाणिनी |
| २१-१ | मदना | प्रमदा |
| २१-२ | महा-मत्ता | मदना सा |
| २४-२ | नागिनी | नागाङ्गी |
| २७-२ | चिन्ताऽचिन्ता | चिन्त्याऽचिन्त्या |
| ३०-१ | स्रोत-वती | सुर-सुरी |
| ३१-१ | शुद्धा | श्रद्धा |
| ३२-१ | स्वभाविनी | विभाविनी |
| ३२-२ | रंकिणी | वन्दिनी |
| ३३-२ | क्षान्ता | क्षान्ति |
| ३५-२ | मति-मती | मतिर्मात्रा |
| ,, | मुक्तिः पति-व्रता | मुक्ति-प्रदा व्रता |
| ३७-२ | तपस्विनी | तमस्विनी |
| ४०-१ | वादिनी | नादिनी |
| ४०-२ | घृणा | घना |
| ४४-१ | रती | रमा |

| | | |
|---|---|---|
| ४४-२ | तथा | कृपा |
| ४७-१ | पूर्णा | पूर्वा |
| ४७-२ | वासिनी | वसिनी |
| ५०-२ | भाविनी | भामिनी |
| ५२-१ | चित्र-लेखा | चित्र-रेखा |
| ५२-२ | भोगवत्यनुवादिनी | भोगवत्यानुरागिणी |
| ५६-१ | कौमारी | कौलिनी |
| ५८-१ | स्वप्रकाशिनी | सुप्रकाशिनी |
| ५८-२ | त्रिगुणात्मिका | निर्गुणात्मिका |
| ५९-१ | काम-जीवना | काम-जीवनी |
| ५९-२ | काम-देव-कला | काम-देव-कुला |
| ६०-१ | दोन-वत्सला | दान-वत्सला |
| ६१-१ | घूर्णा | पूर्णा |
| ६१-२ | हृष्टा | जुष्टा |
| ,, | मनोरूपिणी | मल-रूपिणी |
| ६२-१ | जठरा | जठरी |
| ,, | मालिनी | भीषणा |
| ६२-२ | त्रैलोक्य-पावनीश्वरी | सर्व-सम्मोह-कारिणी |
| ६३-१ | मूर्तिः शर्वरी | रूपा शरभी |
| ६३-२ | सर्व-सम्मोह-कारिणी | त्रैलोक्य-परमेश्वरी |
| ६४-२ | पूज्या युवती | पूजा सुरभी |
| ६५-१ | धरणी पिशिताशना | धरणी रुधिराशना |
| ६७-१ | तत्त्व-प्रतिष्ठिता | सत्व-प्रतिष्ठिता |
| ६८-२ | इज्या····विभीर्भूतिः | इत्या···विभूतिश्च |
| ,, | रूपिणी | चारिणी |
| ६९-१ | करुणा | वरुणा |

| | | |
|---|---|---|
| ६९-२ | देव-माता | वेद-माता |
| ,, | चारिणी | वादिनी |
| ७१-१ | पूर्ण-मना | पूर्ण मता |
| ७४-२ | वशित्वोर्ध्वं | हरिद्वार |
| ७९-२ | वाणी | ज्वाली |
| ८०-१ | विन्दु | विश्व |
| ८०-२ | वहुला | वन्दना |
| ८१-२ | माया काम-वीजेश्वरी | कामा काम-राजेश्वरी |
| ८२-२ | सम्पत्शाला त्रिलोचना | सम्पच्छिला त्रिविक्रमा |
| ८३-१ | सुस्थी | सुश्री |
| ८४-२ | योगिनी योनि० | वशिनी योग० |
| ८९-१ | ० नुकम्पिनी (१)० नुकूलिनी, | (२) ०नुरूपिणी |
| ८९-२ | रञ्जिता | रञ्जिका |
| ९६-१ | सुधा० | सुरा० |
| ,, | उन्मादा० | उन्मत्ता० |
| ९६-२ | मुक्तानन्द० | मुक्त्यानन्द० |
| १००-२ | धीरा | वीरा |
| १०५-२ | स्पर्शाश्म···भूषणा | स्फुरत्···विभूषणा |
| १०६-२ | कोदण्डकाभुग्न | कोदण्ड-भुग्न |
| ,, | प्रवर्षिणी | शर-वर्षिणी |
| १०८-१ | ज्ग्रोतिर्दोश्च | द्योतदोश्च |
| १०९-१ | ग्रंगुरीयक | अंगुलीयक |
| ११०-१ | शिंजिनी | रंजिनी |
| १११-२ | स्फुरद्-रक्त | स्फुरद्-रत्न |
| ,, | विलासिनी | निवासिनी |
| ११४-१ | वादिनी | नादिनी |

| | | |
|---|---|---|
| ११४-२ | ०नन्द-मेखला | ०नङ्ग-मेखला |
| ११५-१ | तथोपयोगिनी | तथोपभोगिनी |
| ११८-२ | भगार्त्मिका | भगालिका |
| ११९-१ | लिङ्गेशी त्रिपुरा-भैरवी | लिङ्गस्था लिंग-स्वरूपिणी |
| १२०-१ | लिङ्ग-माना | लिङ्ग-माला |
| १२१-१ | चक्रिणी | चक्रेशी |
| १३०-१ | ०नन्द-लहरी | ०नन्दा स्वयम्भू |
| १३१-२ | कुसुमात्मिका | कुसुमोत्सुका |
| १३२-१ | कारिणी····पाणिका | करिणी···पालिका |
| १३३-२ | कुसुमोल्लासा | कुसुमोत्पन्ना |
| १३६-१ | प्रज्ञा | प्राणा |
| १३६-२ | रक्त-तारिका | भक्त-भाविका |
| १३७-१ | पूजक-ग्रस्ता | कुसुम-स्पष्टा |
| १३८-१ | सस्मेरा...प्रद० | सुस्मेरा...दर्श० |
| १३९-१ | ०द्भवात्मिका | ०द्भवोद्भावा |
| १३९-२ | ०द्भवोद्भवा | प्रदा शान्ता |
| ,, | द्भवोद्भवा | प्रदोद्भवा |
| १४२-१ | तैजस्का | तैजसी |
| १४३-१ | वरदा | बलदा |
| १४३-२ | कान्ता | साक्षात् |
| १४९-१ | शुक्र-सदा० | शुक्रा महा-शुक्र-विधायिका |
| १५२-१ | आत्म-विद्या | आदि-विद्या |
| १५३-१ | त्रिकूटस्था | त्रिकुलस्था |
| १५३-२ | जप-माला | माला-जप |

फल-श्रुति के पाठ भेद

| | | |
|---|---|---|
| १-२ | त्रैलोक्य-विजयी भवेत् | गाणपत्यंलभेत् तु सः |
| २-२ | पुरम् | (१) पदम्, (२) गतिम् |
| ५-२ | पाद | पद |
| ,, | तत्तदाप्नोति | तं तं प्राप्नोति |
| ,, | निश्चितम् | नित्यशः |

'फल-श्रुति' के ५ वें श्लोक के वाद के समस्त श्लोक पहली वार इस संस्करण में प्रकाशित हो रहे हैं, जो प्राप्त हस्तलिखित पाण्डु-लिपि के आधार पर श्रीभैरवानन्द नाथ की कृपा से प्राप्त हुए हैं।